Research Inventy: International Journal of Engineering And Science
Vol.12, Issue 7 (July 2022), PP 01-04
Issn (e): 2278-4721, Issn (p):2319-6483, www.researchinventy.com

Crop Pattern of Agriculture in Charkhi Dadri: A comparative Study

Sunil Kumari
Scholar of J.J.T. University Dr. Jaidev Prasad Sharma Guide of J.J.T. University, Chudela (Rajasthan)

प्रस्तावना:–
भारत एक कृषि प्रधान देष है जिसकी लगभग 70 प्रतिषत जनसंख्या गॉवों में निवासी करती है व अपनी आजीविका के लिए कृषि कार्य करती है। कृषि यहाँ की एक प्रमुख प्राथमिक आर्थिक क्रिया है। प्राचीनकाल से ही भारत कृषि के क्षेत्र में अग्रणी है, इसलिए भारत को 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। 15 अगस्त, 1947 को भारत आजाद हुआ, लेकिन विभाजन की समस्या ने कृषि को हिलाकर रख दिया। देष की अर्थव्यवस्था निम्नस्तर पर पहुँच गई । धीरे–धीरे कृषि की ओर ध्यान दिया जाने लगा। समय के साथ–साथ कृषि की पद्वतियों में भी परिवर्तन हुआ। परन्तु बढ़ती हुई जनसंख्या ने कृषि क्षेत्र की समस्या की ओर अधिक विकट बना दिया। बढ़ती जनसंख्या के भरण–पोषण के लिए अधिक खाद्यान्नों की आवष्यता थी, जिससे कृषि भूमि का अधिक शोषण किया जाने लगा। कृषि उत्पादन में वृद्धि करने के लिए उच्च उत्पादकता वाले बीजों का प्रयोग भारत के सात राज्यों में सात जिलों में किया गया । इसके साथ ही कृषि में रासायनिक खादों, कीटनाषकों व मषीनीकरण का भी प्रयोग होने लगा था । जिससे हरित क्रान्ति का नाम दिया गया। वास्तव में यह एक नीति थी, जिसका मुख्य उद्देष्य उत्पादन में वृद्धि करना था। इसके उपरांत यहाँ कई प्रकार की फसलों का उत्पादन किया जाने लगा ।

मुख्य बिन्दू: *प्राथमिक, खाद्यान्नों, कीटनाषकों, उर्वरकों, उत्पादन, अर्थव्यवस्था ।*

Date of Submission: 03-07-2022 Date of Acceptance: 16-07-2022

चरखी दादरी : स्थिति एवं विस्तार

यह एक नवनिर्मित जिला है जिसे 04 दिसम्बर,2016 को वैधानिक रूप से अलग जिला बना दिया गया है। इसका अक्षांषीय विस्तार 28′22′ उत्तरी अक्षांष से 28′49′ उत्तरी अक्षांष तक तथा देषांतरीय विस्तार 75′149′ पूर्वी देषांतर से 76′27 पूर्वी देषांतरों के मध्य में स्थित है। इसके पूर्व में झज्जर, पष्चिम में भिवानी, उत्तरमें रोहतक व दक्षिण में महेन्द्रगढ़ जिले स्थित है । इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 1370.11 वर्ग किलोमीटर है । यह भारत की राजधानी नई दिल्ली से मुख्यतः 1126.6 किलोमीटर व हरियाणा की राजधानी चण्डीगढ़ से लगभग 295 किलेमीटर दूर स्थित है। चरखी दादरी जिले के अन्तर्गत 174 गॉव आते हैं। कृषि चरखी दादरी जिले का एक महत्वपूर्ण उद्यम है। यहाँ बहुत अधिक जनसंख्या अपने आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर करती है। इस जिले के निर्वाह कृषि के साथ–साथ वाणिज्यिक कृषि भी की जाती है। वाणिज्यिक फसलों में कपास, मक्का, तम्बाकू, सरसों, मूँगफली आदि शामिल हैं।

कृषि फसल प्रारूप :–

जिले का फसल प्रारूप विभिन्न प्रकार के भौगोलिक कारकों से प्रभावित रहा है । जो कृषि फसल प्रारूप को तीन वर्गो में विभक्त करता है। जो इस प्रकार हैः–

1) खरीफ की फसलें– बाजरा, मक्का, ज्वार ।
2) रबी की फसलें– गेहूँ, जौ, चना, सरसो व तारामीरा ।
3) जायद की फसलें– ककड़ी, तरबूज आदि ।

मानचित्र सं. 3.1

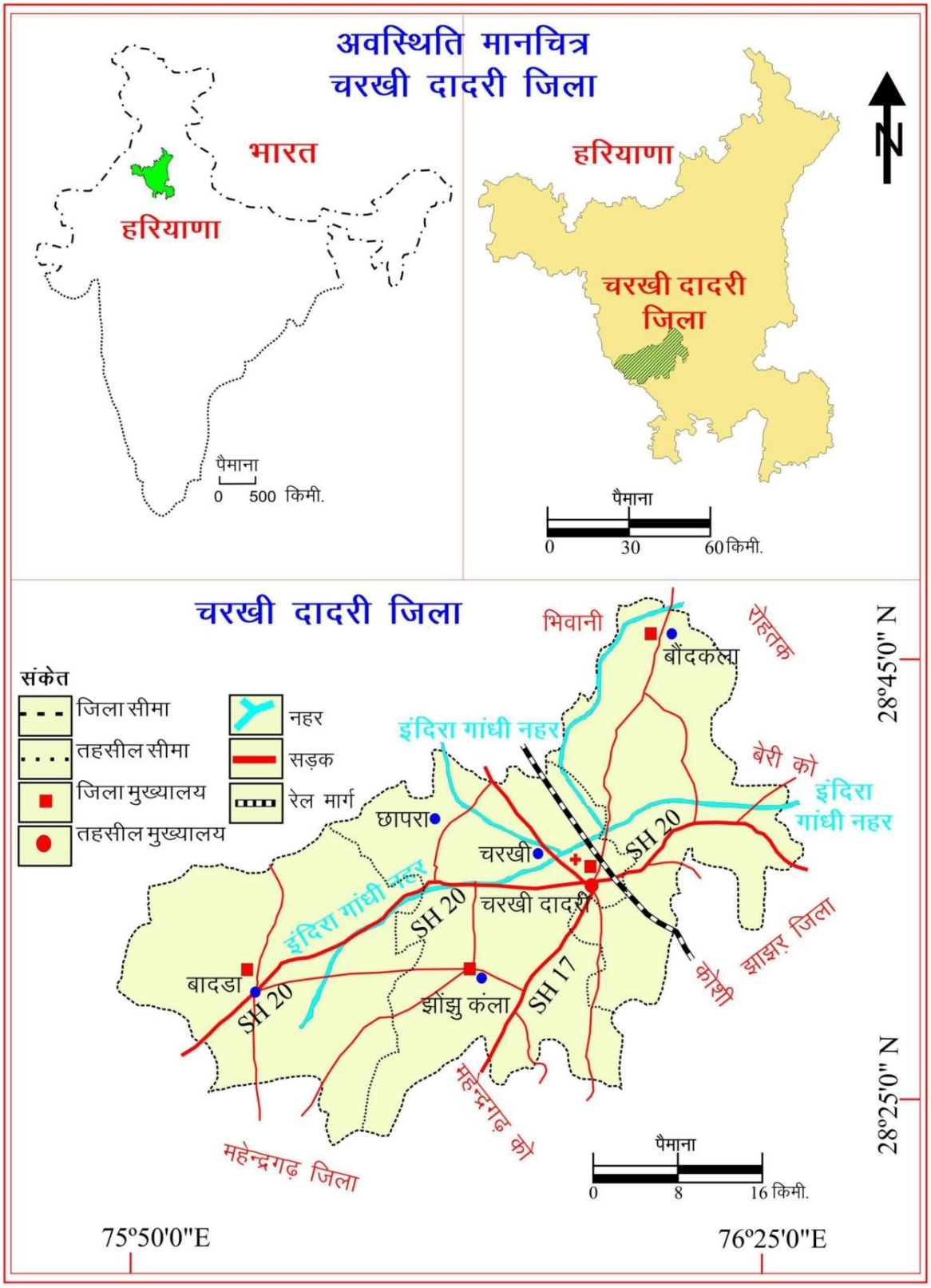

शस्य श्रेणी क्रम–

शस्य श्रेणी के आधार पर भी कृषि प्रारूप का अध्ययन होता है। परम्परागत कृषि व्यवस्था में भोजन अर्थात खाद्य आपूर्ति के लिए फसलों का ही उत्पादन किया जाता था जबकि उन्नत कृषि अर्थव्यवस्था में फसलों के उत्पादन में प्रति हैक्टेयर वृद्धि होने से खाद्य फसलें अपनी आवश्यकता की आपूर्ति के लिए पैदा की जाती है। जबकि अन्य कृषि क्षेत्र में अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियां होने पर व्यापारिक फसलों की

तुलना में खाद्य फसलें कृषक कम पैदा करता है। क्योंकि व्यापारिक फसलों से आमद अधिक होती है। हरियाणा राज्य में भी व्यापारिक फसलों का क्षेत्र में वृद्धि हुई है।

शस्य श्रेणी क्रम से तात्पर्य जिले में उत्पादित फसलों में प्राथमिक स्तर पर प्रमुख फसलों की जानकारी करना होता है। प्रत्येक क्षेत्र में भौगोलिक दशाओं की सीमाओं के कारण कुछ ही फसलें प्रमुख होती है। और अध्ययन क्षेत्र चरखी दादरी जिले में अधिकांश कृषि क्षेत्र प्रमुख फसलों के अन्तर्गत सम्मिलित रहा है। क्योंकि कृषि विकास में शस्य क्रम की प्रमुख फसलों की अधिकता रहती है।

चरखी दादरी जिला
शस्य श्रेणी क्रम 2008–2018

क्र.सं.	वर्ष	प्रमुख फसल एक फसल के अन्तर्गत क्षेत्र में				
		प्रथम क्रम	द्वितीय क्रम	तृतीय क्रम	चतुर्थ क्रम	पंचम क्रम
1	2008	बजरा	गेहूँ	जौ	चना	चावल
2	2018	गेहूं	बाजरा	कपास	जौ	चावल

अध्ययन में एक फसल के क्षेत्र के अनुसार यहाँ फसली क्रम ज्ञात किया गया है। जो निम्न प्रकार हैः–

1. बाजारा फसल –

अध्ययन क्षेत्र चरखी दादरी जिले में बाजरा प्रथम क्रम की फसल के रूप में रही है। वह खरीफ की प्रमुख फसल है, जो यह फसल वर्ष 2008 में प्रथम क्रम की रही है तथा यह वर्ष 2018 में द्वितीय क्रम की रही है अर्थात अध्ययन क्षेत्र चरखी दादरी जिले में बाजरा कुल कृषि क्षेत्र के 526 सौ हैक्टेयर पर बोया गया है और कुल फसली क्षेत्र का 26.93 प्रतिशत है। बाजरा क्षेत्र का क्षेत्र अधिक व प्रथम क्रम पर रहने के कारणों में यह सभी क्षेत्र पर आसानी से बोयी जाने वाली फसल है। तथा बाजरा शुष्क फसल, वर्षा की कमी वाले क्षेत्रों के साथ कम पानी वाले क्षेत्रों एवं कम उपजाऊ वाले क्षेत्रों में उपयुक्त मात्रा में उत्पादन प्राप्त हो जाता है। यह फसल खाद्य के साथ इसका उपयोग पशु पालन आदि में होता है। इससे पशु चारा भी अधिक मात्रा में उत्पादित होता हैं।

2. गेहूँ–

गेहूँ रबी की एक प्रमुख खाद्य फसल है, जो जिले के लिए भी सर्वाधिक उपयोगी एवं खाद्य फसल के रूप में रही है। यह फसल सिंचित फसल है जो रबी के मौसम में बोयी जाती है। यह जिले की प्रमुख फसलों में द्वितीय स्थान की फसल है गेहूँ वर्ष 2008 में द्वितीय क्रम की फसल थी जो वर्ष 2018 में भी प्रथम क्रम पर ही बनी हुई है। वर्ष 2018 में गेहूँ के अन्तर्गत क्षेत्र 54 हजार हैक्टैयर पर बोयी गयी है जो कुल क्षेत्र का 36.24 प्रतिशत है। यहाँ गेहूँ की फसल के लिए उपयुक्त भौगोलिक दशाएं है जिनमें समतल धरातल, सिंचाई की सुविधाएं अधिक उपज देने वाली मृदा है। यहाँ पशु पालन प्रमुख रूप से गेहूँ व फसलों पर निर्भर है क्योंकि इन्हें पशुचारा मुख्यतः बाजरा, गेहूँ व जौ से प्राप्त होता है। यह भी एक कारण है कि यह फसल यहाँ द्वितीय क्रम की फसल रही है।

3. चना–

यह रबी की एक दलहन फसल है इसका उत्पादन कमं सिंचाई क्षेत्र, कम उपजाऊ क्षेत्र में भी किया जाता है। इसका उत्पादन अच्छी मात्रा में होता है। यह दलहन फसलों में सबसे प्रमुख फसल है। वर्ष 2008 में यह फसल चतुर्थ स्थान पर रही थी। जो वर्ष 2018 में तृतीय क्रम की फसल बनी हुई हैं वर्ष 2018 के अनुसार चना नगण्य हेक्टेयर पर बोया गया है जो कुल फसली क्षेत्र का 0.00 प्रतिशत है। इस फसल को उत्पादन करने के लिए चरखी दादरी जिले में कृषक रूचि रखते है। चना फसल को क्षेत्र में कृषिगत स्थान देते है। यह यहाँ शुष्क फसल के रूप में पैदा की जाती है। इसमें सिंचाई की बहुत कम आवश्यकता होती है। कभी कभी चना वर्षा व मावट के आधार पर भी उत्पादित हो जाता ळें

चरखी दादरी जिला
मुख्य फसलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल

क्र.सं.	फसलें	वर्ष 2008		वर्ष 2018		दशकीय परिवर्तन
		क्षेत्र है. में	प्रतिशत	क्षेत्र है. में	प्रतिशत	.६
1.	गेहूँ	515	26ण्37	54	36ण्24	9ण्87
2.	बाजरा	526	26ण्93	37	24ण्93	.2ण्0
3.	जौ	39	2ण्00	12	8ण्05	6ण्05
4.	च्ना	46	2ण्36	.	.	.2ण्36
5.	चावल	38	1ण्94	10	6ण्71	4ण्77
6.	मूंग	5	0ण्26	.	.	.0ण्26
7.	अन्य दालें	21	1ण्08	.	.	.1ण्08
8.	तारामीरा, तोरिया तथा सरसों	619	21ण्69	.	.	21ण्269
9.	अन्य फसले	9	0ण्46	.	.	.0ण्46
10.	कपास	135	6ण्91	36	24ण्16	17ण्25
	कुल कृषि क्षेत्र	**1953**	**100**	**149**	**100**	

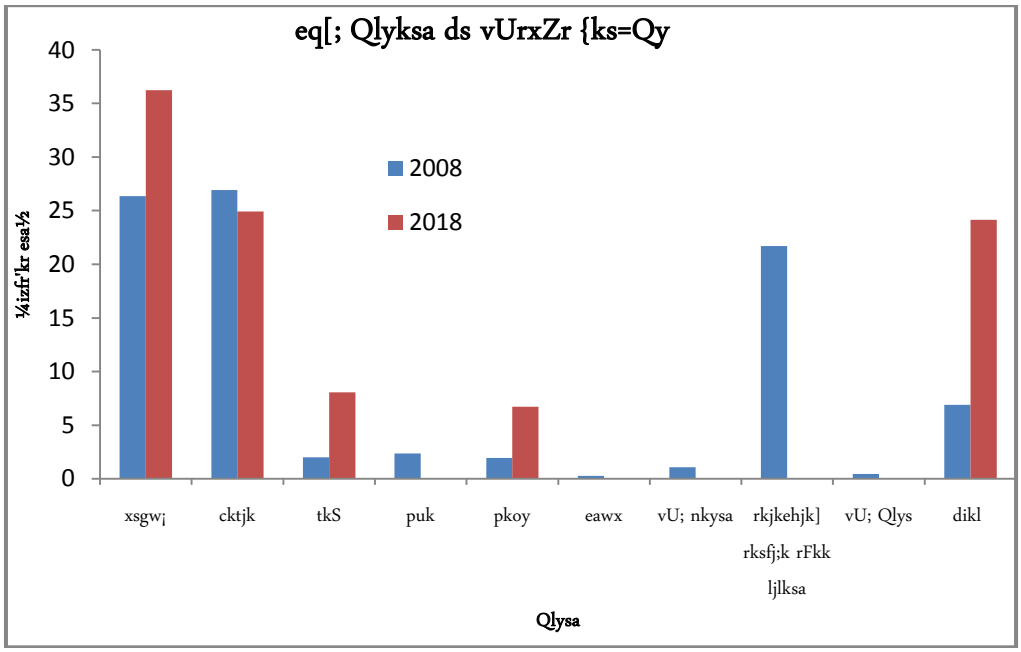

4. जौ फसल–

यह यहाँ की रबी फसल है यह शुष्क फसल के रूप में भी बोयी जाती है। जौ जिले की चतुर्थ क्रम की फसल के रूप में बोयी जाती है। जौ वर्ष 2008 में तृतीय क्रम की थी लेकिन चना क्षेत्र में वृद्धि के कारण यह वर्ष 2018 में चतुर्थ क्रम पर बोयी गई है। यह कम सिंचित फसल क्षेत्र पर तथा कम उपजाऊ कृषि भूमि पर बोयी जाती है। जौ फसल वर्ष 2018 में 12 हजार हैक्टेयर पर बोयी गई है जो कुल कृषि भूमि क्षेत्र का 2.0 प्रतिशत है। यहाँ जौ द्वारा बीयर बनाने के साथ– साथ यहाँ खाद्य रूप में भी उपयोग में ली जाती है।

5. चावल–

चरखी दारदी जिले में चावल बहुत कम क्षेत्र पर बोया जाता है। यह तराई क्षेत्रों तथा सिंचाई के साथ अधिक वर्षा व काली चिकनी मिट्टी में बोया जाता है। यह वर्ष 2008 में भी 5 वें क्रम पर बोयी जाने वाली फसल रही थी। और वर्ष 2018 में भी भी यह पांचवे क्रम की ही फसल रही है। यह वर्ष 2018 में 10 हजार हैक्टेयर पर बोयी गयी है। जो कुल कृषि क्षेत्र के 6.71 प्रतिशत पर बोयी जाने वाली फसल है।

इस प्रकार फसल प्रतिरूप के विश्लेषण से स्पष्ट है कि चरखी दादरी जिले में खाद्यान्न फसलों को प्रथम तथा द्वितीय क्रम पर बोया जाता है। जिसमें बाजरा, गेहूँ फसल प्रमुख है। इसका प्रमुख कारण है कि जिले को ये (गेहूँ) खाद्यान्न फसलें है तथा ये पशु चारण के लिए पशुचारा भी उपलब्ध कराती है। इस क्षेत्र में पशुपालन व्यवसाय प्रमुख है। जिसमें गेहूँ, बाजरा व अन्य फसलों से प्राप्त पशु चारा अधिक उपयोगी है। अतः यहाँ के फसल प्रतिरूप को जनसंख्या एवं पशुपालन ने भी प्रभावित किया है।

निष्कर्ष:–

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि शोध क्षेत्र चरखी दादरी में विभिन्न प्रकार की फसलों को उगाया जाता है। इस क्षेत्र मतें बहुविध फसल प्रणाली अपनाई जाती है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. Singh, Srinath (1976) "Modernization of Agriculture" (A case study in Eastern U.P.), Hesitage Publishers, New Delhi.
2. Singh, Jasvir (1976) An Agricultural Geography of Haryana" Vishal Publication University Campus, Kurukshetra.
3 . SinghV.R. (1962) 'Land utilization in the neighbourhood of Mirzapur U.P. Ph.D Disseration, Dept. of Geography Banaras Hindu University Varanasi (Unpublished)

4. सिंह काशी नाथ एवं सिंह जगदीश आर्थिक भूगोल के मूल तत्त्व, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।
5. सिंह छिद्दा (1984) खरीफ फसलों की वैज्ञानिक खेती एवं फसल परिस्थिकी,'' भारती प्रकाशन, मेरठ।
6. Stamp L.D. 1938 'Land utilization maps of India, Madras Geog. association, vol. 13. 1,

Sunil Kumari. "Crop Pattern of Agriculture in Charkhi Dadri: A comparative Study." *International Journal of Engineering and Science*, vol. 12, no. 7, 2022, pp. 01-04.